नाव सिन्धु में छोड़ी

भूमिका

डॉ. क्षेमचंद्र 'सुमन'

'नाव सिन्धु में छोड़ी' हिन्दी की छायावादोत्तर काल की पीढ़ी के कवियों में अन्यतम श्री गुलाब खंडेलवाल की नवीनतम रचना है। लगभग पाँच दशक तक हिन्दी-गीति-काव्य के भण्डार की समृद्धि करते रहने पर वे अभी भी थके नहीं हैं। ज्यों-ज्यों वे जीवन के कर्ममय सोपानों को अपने सशक्त काव्य-कौशल से प्रशक्त करते जाते हैं त्यों-त्यों उनकी प्रतिभा और भी प्रोज्ज्वलता से अपनी सशक्त पहचान बनाती चली आ रही है।

अनुभूतियों की सघनता और जीवन के विविध लोकोपयोगी पक्षों की सहज संवेदना से अभिषिक्त उनकी सशक्त लेखनी नित नई काव्य-विधाओं का सर्जन जिस तत्परता और जीवन्तता के साथ कर रही है वह कभी-कभी 'ईर्ष्या', और 'आश्चर्य' दोनों की पृष्ठभूमि बनाती चलती है। 'ईर्ष्या' तो कुछ 'विघ्न-संतोषी' जनों को इसलिए होती है कि इतना काल बीत जाने पर भी कवि गुलाब की भावनाओं की ताज़गी में कोई कमी नहीं दिखाई नहीं देती; और 'आश्चर्य' इसलिए होता है कि शैलीगत वैशिष्ट्य की दृष्टि से उन्होंने अपने काव्य में इतने बहुविध प्रयोग किये हैं, जो साधारणतः अभी तक किसी अन्य साहित्यकार में दिखाई नहीं देते। कविवर जयशंकर 'प्रसाद' को इसका अपवाद समझा जा सकता है।

अपने कवि-जीवन के प्रारम्भ में कविवर गुलाब को काशी जैसी संस्कृति-संपन्न नगरी में निवास करने का जो सुयोग मिला था, कदाचित् उसीके कारण उनमें यह अद्‌भुत् प्रतिभा आ सकी है। प्रसाद-परिषद् जैसी संस्था में अनेक ख्याति-लब्ध साहित्यकारों का सुखद साहचर्य ही उनकी काव्य-साधना को सफलता के चरम बिंदु पर पहुँचा सका। उन्होंने महाकाव्य, प्रबंधकाव्य, खंडकाव्य और मुक्तक

काव्य की विभिन्न काव्य-पद्धतियों पर अनेक सफल रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। यहाँ तक कि आधुनिकतम परिवेश का आवरण धारण किये हुए अनेक सफल 'गज़लें' भी उन्होंने लिखी हैं। जो लोग दुष्यंत को हिन्दी ग़ज़ल का सशक्त सार्थवाह सिद्ध करने में जी-जान से जुटे हैं, क्या उन्हें विदित नहीं है कि भारतेंदु, प्रसाद, निराला, महाकवि शंकर और सुकवि सनेही जैसे अपने पूर्ववर्ती अनेक ख्यातिलब्ध कवियों के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर कवि गुलाब ने अपनी आतंरिक ऊर्जा को 'ग़ज़ल' के माध्यम से भी अत्यंत सफलता से हिन्दी-पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। छायावाद युगीन काव्य-चेतना तथा तत्पश्चात् प्रगतिवाद भावधारा से संवलित अनेक रचनाएँ भी उन्होंने उसी सफलता तथा त्वरा से की है जिस आत्मीयता की ऊर्जा उनकी अन्य कृतियों में मुखरित हुई है।

जीवन की अनेक खट्टी-मीठी तीखी अनुभूतियों को छोटे-छोटे गीतों और मुक्तकों में रूपायित करने की जो अद्‌भुत क्षमता कवि गुलाब में है वह कदाचित अन्यत्र विरल ही दृष्टिगत होगी। 'नाव सिन्धु में छोड़ी' में उनकी ऐसी ही अनुभूतियों का अत्यंत सरस-सफल अंकन किया गया है। मैं इन रचनाओं को 'गीत' न कहकर 'गीतिका' कहना अधिक उपयुक्त समझता हूँ। इन छोटी-छोटी गीतिकाओं में कवि गुलाब ने इस संसार को एक 'शीशमहल' के रूप में चित्रित करते हुए यह ठीक ही कहा है ---

यह तो शीशमहल है
रंग-बिरंगे शीशों की ही इसमें चहल-पहल है
शीशे के हैं सारे प्राणी
भवन बगीचे, राजा-रानी
सब पर है सोने का पानी
करता जो झलमल है

वे इस संसार को चाहे जितना 'शीशे के महल' के रूप में देखते हों फिर भी यह तो स्वीकार करते ही हैं ---

कितनी भी हो प्रीति परायी
मन की लौ बुझती न बुझायी
फिर से प्राणों में लहरायी
केसर की-सी क्यारी

मानवीय अनुभूतियों को अनेक रूपों में चित्रित करके उनकी विशिष्टताओं का सम्यक् रूपायन कवि गुलाब ने अपनी इन गीतिकाओं में इस अद्‌भुत शैली में किया है कि ये 'सूक्ति-मुक्ता' का रूप धारण कर गयी हैं। अपनी ऐसी भावना को कवि ने यों चित्रित किया है ----

बुद्धि जहाँ भटकी मृग-जल में
श्रद्धा पहुँच गयी है पल में
मैंने तो तेरे पग-तल में ---
अपना उत्तर पाया
कैसी अद्‌भुत् तेरी माया !

अपने अभीष्ट की अद्‌भुत् माया की अनुभूति कवि-मानस जिस सूत्र में करता है उसका वर्णन इन पंक्तियों में पूर्णतः सफल हुआ है---

मन तब तेरा ध्यान करेगा
सुधा-कलश नभ से उतरेगा
मैं न मरूँगा, काल मरेगा
सुख से तन त्यागूँगा
जब मैं सोते से जागूँगा

सांसारिक जीवन की विविध प्रवृत्तियों के प्रति अपनी विरक्ति-अनुरक्ति की भावनाओं का चित्रण कवि ने इस कृति की अधिकांश रचनाओं में जिस प्रकार किया है वह माननीय और वरणीय है। भावनाओं की उदात्तता तथा वर्णन की सजीवता इन रचनाओं में सर्वत्र प्रचुरता से परिलक्षित होती है। एक स्थल पर संसार की नश्वरता का संकेत उसने इस प्रकार किया है ---

जाने कौन कहाँ अब जाये

बिछुड़े हुए न फिर मिल पाये
तट पर सबको हाथ उठाये
राम-राम बस कहिए
पास-पास ही रहिए

जीवन में निरंतर गतिशीलता बनाए रखकर अपनी मानस लहरियों में निरत रहना और शेष जगत् को नश्वर समझना भी इन रचनाओं की आधार-भूमि है। तभी तो कवि ने निरंतर कर्म-रत रहकर कभी विराम न लेने की भावना से बराबर यह उद्घोष किया है ---

नहीं विराम लिया है
ज्यों-ज्यों दिवस ढल रहा मैंने चलना तेज किया है
ज्ञान-भक्ति की लेकर गागर
जो युग-युग से बैठे पथ पर
श्रद्धा की अंजलि फैलाकर
उनसे अमृत पिया है

यह 'अमृत' पीने की अदम्य और उत्कट लालसा कवि के मानस को चुप नहीं बैठने देती और वह यह कहने को विवश हो जाता है---

हम तो शब्दों के व्यापारी
शब्दों की दूकान लगाये बैठे गद्दीधारी
यह जग-सृष्टि न टिक पाती है
बन-बन कर मिटती जाती है
पर शब्दों में लहराती है
युग-युग सृष्टि हमारी
हम तो शब्दों के व्यापारी

कवि गुलाब पिछले ५० वर्षों से शब्दों का व्यापार ही कर रहे हैं और उनका यह व्यापार उन्हें इतना फला है कि वे उसमें ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं तभी तो उनकी यह कामना इन पंक्तियों में मुखरित हुई है ---

जीवन गाते-गाते बीते

और पहुँचकर अंतिम सुर पर सुमनांजलि-सा रीते
नव-नव धुन जागे क्षण-क्षण में
नित नव राग उठे जीवन में
गीतों में सज दूँ जो मन में
दुःख हों मीठे-तीते

कवि गुलाब वास्तव में मन से और तन से सर्वात्मना निरंतर गाते जाने और अपनी उन्हीं भावनाओं में बहते रहने की साध को इस प्रकार अभिव्यक्त करके आत्म-तुष्टि का अनुभव करते हैं। उन्होंने ठीक ही लिखा है---

ग़ज़ल कहो या गीत
दोनों ही हैं मेरे जीवन-मंथन के नवनीत

'नाव सिन्धु में छोड़ी' की ये रचनाएँ वास्तव में गुलाब के कवि-जीवन-मंथन से निःसृत ऐसा नवनीत है कि उसमें कहीं भी नीरसता दृष्टिगत नहीं होती और हम उन्मुक्त भाव से कवि के शब्दों में यह उद्घोष करने को विवश होते हैं ---

पीड़ा की रागिनी मधुर यह
करुणा का संगीत
प्रेम-विकल मानस से फूटी
यह जाह्नवी पुनीत
ग़ज़ल कहो या गीत

सारांशतः, बहुआयामी प्रतिभा के धनी कवि गुलाब की इस कृति में सहज, सरल और स्पष्ट शैली में अनेकविध भंगिमाओं की अत्यंत प्रभावोत्पादकता देखी जा सकती है, जो उनके कवि-कर्म की सार्थकता है। मैं उनकी इस सार्थक कृति का हृदय से स्वागत करता हूँ।

अजय निवास क्षेमचंद्र 'सुमन'
दिलशाद कॉलोनी
शाहदरा, दिल्ली ---११००९५